मा । ख ७

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र १

(प्राचीन काव्य तथा रस, छन्द और अलङ्कार)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम तथा द्वितीय प्रश्न का उत्तर लिखना अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. अधोलिखित अवतरणों में से किन्हीं चार की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए– ४०

(क) नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही।।
नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी।।
सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होंहि विषय रत मंद मंद तर।।
काँच किरिच बदले ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं।।
नहिं दरिद्र सम दुःख जगमाहीं। संत मिलन सम सुख जग नाहीं।।
पर उपकार बचन मन काया। संत सहज सुभाउ खगराया।।
संत सहहिं दुःख परहित लागी। पर दुःख हेतु असंत अभागी।।
भूर्ज तरू सम संत कृपाला। परहित निति सह विपति विसाला।।

(ख) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मनक्रम बचन नंद नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।।
जागत सोवत स्वप्न दिवस निसि, कान्ह कान्ह जकरी।।
सुनत जोग लगत है ऐसौ, ज्यों करुई ककरी।।
सु तौ व्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।।
यह तौ सूर तिनहिं लै सौपों जिनके मन चकरी।।

(ग) धूरि–भरे अति सोभित स्याम जू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरैं अँगना, पग पैजनी बाजतीं पीरी कछोटी।
वा छवि को 'रसखानि' विलोकत, वारत काम कला निज कोटी।
काग के भाग कहा कहिए, हरि–हाथ ते लै गयो माखन रोटी।।

(घ) चरन कमल बन्दौं हरि राई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघैं, आँधर को सब कुछ दरसाई।
बहिरौ सुनै, मूक पुनि बोलै, रंक चलै सिर छत्र धराई।
'सूरदास' स्वामी करुनामय, बार बार बन्दौं तिहिं पाई।।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(ङ) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होय।
सीस मुकुट कटि काछनी, कर मुरली उर माल।
यह बानिक मो मन बसौ, सदा बिहारी लाल।।

(च) हरि के नाम कौं आलस क्यों करत है रे, काल फिरत सर साँधे।
हीरा बहुत जवाहर सचैं, कहा भयो हस्ती दर बाँधे।
बेर–कुबेर कछु नहिं जानत, चढ़ो फिरत है काँधै।
कहि 'हरिदास' कछू न चलत जब, आवत अंत की आँधै।।

२. (क) श्रृंगार रस, वीभत्स रस, अद्भुत रस अथवा करुण रस में से किन्हीं दो रसों की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए। १०

(ख) अनुप्रास, श्लेष, भ्रान्तिमान व उत्प्रेक्षा अलङ्कारों में से किन्हीं दो अलङ्कारों की उदाहरण सहित परिभाषा लिखिए। १०

(ग) चौपाई, रोला, सवैया अथवा इन्द्रवज्रा छन्दों में से किन्हीं दो छन्दों का लक्षण उदाहरण सहित लिखिए। १०

३. गोस्वामी तुलसी दास का जीवन–परिचय लिखते हुए उनकी काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए। १५

४. श्री कृष्ण के बाल स्वभाव और शरीर–सौन्दर्य की जिन विशेषताओं का वर्णन सूरदास ने किया है उन्हें उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए। १५

५. सिद्ध कीजिए कि दोहे जैसे छोटे छन्द में बिहारी ने समस्त रस सामग्री का समावेश कर गागर में सागर भर दिया है। १५

६. रसखान की प्रमुख रचनाओं का उल्लेख करते हुए उनके काव्य–सौन्दर्य पर प्रकाश डालिए। १५

७. 'सुदामा चरित' काव्य के भाव को अपने शब्दों में लिखिए। १५

म

मा । ख ८

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र २

(आधुनिक काव्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

सूचना–प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

१. निम्नलिखित पद्यांशों में से किन्हीं चार की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए– ४०

(क) तू पूछ, अवध से, राम कहाँ?
वृन्दा! बोलो घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

(ख) बाहर के आँधी–पानी से मन के तूफान कहीं बढ़कर,
बाहर के सब आघातों से मन के अवसान कहीं बढ़कर,
फिर भी मेरे मरते मन ने तुम तक उड़ने की गति चाही,
तुमने अपनी लौ से मेरे सपनों की चंचलता दाही।।

(ग) आज किसके द्वार है शहनाइयों की धूम?
और किसके खेत में किरनें रही हैं घूम।
भारती की वेणि में गूँधा हुआ कश्मीर
कर रहा है विश्व के सन्देह सौ–सौ दूर।
सखि वितस्ता के स्वरों 'बलि' गा गये ऋतुराज!

(घ) तेरे असीम आँगन की
देखूँ जगमन दीवाली,
या इस निर्जन कोने के
बुझते दीपक को देखूँ!

(ङ) परिरम्भ कुम्भ की मदिरा
निश्वास मलय के झोंके
मुख–चन्द्र चाँदनी जल से
मैं उठता था मुँह धोके!

(कृपया पन्ना उलटिए)

अथवा

व्याकुल उस मधु सौरभ से
मलयानिल धीरे–धीरे
निश्वास छोड़ जाता है
अब विरह तरङ्गिनि तीरे!

२. मैथिलीशरण गुप्त के काव्य–सौष्ठव पर प्रकाश डालिए। २०

३. आँसू की लोकोत्तर वर्णना की विवेचना कीजिए। २०

४. निराला के रहस्यवाद का परिचय दीजिए। २०

५. पंत के प्रकृति वर्णन पर प्रकाश डालिए। २०

६. अधोलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए :– २०

(क) आधुनिक मीरा महादेवी।

(ख) रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' का छायावाद के प्रति विद्रोह।

(ग) रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताओं में राष्ट्रीयता।

(घ) माखनलाल चतुर्वेदी का राष्ट्र–प्रेम।

म

मा । ख ९

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ३

(आधुनिक गद्य)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. अधोलिखित गद्यांशों में से किन्हीं **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या लिखिए– ४०

(क) जो लोग पूरे ब्रह्मज्ञानी बनकर संसार को सचमुच मायावी कल्पना मान बैठते हैं, वे अपनी भ्रमात्मक बुद्धि से चाहे अपने तुच्छ जीवन को साक्षात् सर्वेश्वर मान के सर्वथा सुखी हो जाने का धोखा खाया करें, पर संसार के किसी काम के नहीं रह जाते हैं।

(ख) प्रेम और श्रद्धा में अन्तर यह है कि प्रेम प्रिय के स्वाधीन कार्यों पर उतना निर्भर नहीं, कभी–कभी किसी का रूप मात्र जिसमें उसका कुछ भी हाथ नहीं, उसके प्रति प्रेम उत्पन्न होने का कारण होता है। पर श्रद्धा ऐसी नहीं है।

(ग) प्रगतिशील नारी समाज के ये विभिन्न विभाग, किसी वास्तविक अन्तर के आधार पर स्थित हैं, क्योंकि ऐसे विभाग ऐसी विशेषताओं पर आश्रित होते हैं, जो जीवन के गहन तल में एक हो जाती है।

(घ) नवयुवक युवावस्था में कितना उदण्ड रहता है, माता–पिता उसकी ओर से कितने चिंतित रहते हैं। वे उसे कुल–कलंक समझते हैं, परन्तु थोड़े ही समय में परिवार का बोझ सिर पर पड़ते ही वह अव्यवस्थित चित्त उन्मत्त युवक कितना धौर्यशील, कैसा शांत–चित्त हो जाता है, यह भी उत्तरदायित्व के ज्ञान का फल है।

२. आचार्य विष्णुगुप्त नाटक के आधार पर 'चंद्रगुप्त' अथवा 'सिकन्दर' की चारित्रिक विशेषताओं का वर्णन कीजिए। १५

(कृपया पन्ना उलटिए)

३. 'सती' **अथवा** 'शरणदाता' कहानी का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। १५

४. निम्नलिखित साहित्यकारों में से किसी **एक** की साहित्यिक रचनाओं पर प्रकाश डालिए– १५

आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी, महादेवी वर्मा, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी।

५. 'स्ट्राइक' **अथवा** 'कंगाल नहीं' एकाङ्की का सारांश अपने शब्दों में लिखिए। १५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, इलाहाबाद

मध्यमा (विशारद) परीक्षा–सन् २०१९ (संवत् २०७६)

हिन्दी साहित्य – प्रश्नपत्र ४

(हिन्दी भाषा, देवनागरी लिपि और अङ्कों का विकास, निबन्ध, संक्षेपण, (पल्लवन तथा संस्कृत)

समय : तीन घण्टा) (पूर्णाङ्क : १००

१. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर निबन्ध लिखिए– ३०

(क) स्त्री-शिक्षा।

(ख) राष्ट्र के विकास में युवाओं का योगदान।

(ग) विज्ञान एक वरदान एवं अभिशाप।

(घ) नारी सशक्तिकरण।

(ङ) राजनीति और धर्म।

२. खरोष्ठी और ब्राह्मी लिपियों का परिचय देते हुए ब्राह्मी से विकसित भारतीय लिपियों का वर्णन कीजिए। २०

अथवा

व्यंग्यात्मक अथवा अव्यंगात्मक शैली का सोदाहरण परिचय दीजिए।

३. रचना कौशल का क्या अभिप्राय है? २०

अथवा

प्राकृत भाषा का परिचय देते हुए विभिन्न प्राकृत भाषाओं का वर्णन कीजिए।

४. (क) अधोलिखित वाक्य का भाव-पल्लवन कीजिए– ७

सागर के समान कामना-नदियों को पचाते हुए सीमा से बाहर न जाना ही तो मनुष्य का आदर्श है।

अथवा

सौन्दर्य से नारी अभिमानी बनती है, उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है और लज्जाशील होकर वह देवी बन जाती है।

(कृपया पन्ना उलटिए)

(ख) निम्नलिखित गद्य-खण्ड का संक्षेपण कीजिए। ८

जयदेव की देववाणी की स्निग्धपीयूष धारा, जो काल की कठोरता में दब गई थी, अवकाश पाते ही लोकभाषा की सरसता में परिणत होकर मिथिला की अमराइयों में विद्यापति के कोकिल कण्ठ से प्रकट हुई और आगे चलकर ब्रज के करील-कुञ्जों के बीच फैलकर मुरझाए मन सींचने लगी। आचार्यों की छाप लगी हुई आठ वीणाएँ श्रीकृष्ण की प्रेम लीला का कीर्तन कर उठीं, जिनसे सबसे ऊँची, सुरीली और मधुर झंकार अन्धे कवि सूरदास की वीणा की थी।

५. निम्नलिखित खण्डों में से किसी एक खण्ड का प्रसंग सहित हिन्दी में भावार्थ लिखिए– १०

संसार कटु वृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपये।
सुभाषितरसास्वादः सङ्गतिः सुजने जने।।
विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते।।

अथवा

एकदा मृगय परवशो राजा अत्यन्तमार्तः कस्यचित्सरोवरस्य तीरे निविडच्छयस्य जम्बू वृक्षस्य मूलमुपाविसत्। तत्र शयाने राज्ञि जम्बोरुपरि बहुभिः कपिभिः जम्बू फलानि सर्वाण्यपि चालितानि। तानि सशब्दं पतितानि पश्यन् घटिकामात्रं स्थित्वा श्रमं परिहृत्य उत्थाय गुरङ्गमारुह्य गतः।

६. निम्नलिखित वाक्यों में से किन्हीं पाँच का हिन्दी में अनुवाद कीजिए। ५

(क) अस्ति कस्मिंश्चिज्जलाशये कम्बुग्रीवोनाम कच्छपः।

(ख) नदी तटात् सश्येनेन हृतः।

(ग) सुखस्यमूलं धर्मः।

(घ) धर्मस्यमूलं अर्थः।

(ङ) अर्थस्यमूलं राज्यं।

(च) राज्यमूलमिन्द्रिय जयः।